उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०द्वि०—पत्र

द्वितीय-भाग-2, गद्य खण्ड

शीर्षक - बातचीत, लेखक - बालकृष्ण भट्ट

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर—

प्रश्न:- अगर हममें वाक्शक्ति न होती तो क्या होता?

उत्तर:- हममें वाक्शक्ति न होती तो मनुष्य गूँगा होता, वह मूकबधिर होता। मनुष्य को सृष्टि की सबसे महत्त्वपूर्ण देन उसकी वाक्शक्ति है। इसी वाक्शक्ति के कारण वह समाज में वार्तालाप करता है। वह अपनी बातों को अभिव्यक्त करता है। यह प्रकृति का वरदान है। यदि हममें इस वाक्शक्ति का अभाव होता तो हम पशुओं के समान होते। जो सुख-दुःख हमें इन्द्रियों के कारण अनुभव करते हैं वह वाक्शक्ति न रहने के कारण नहीं कह पाते।

प्रश्न:- 'आर्ट ऑफ कनवरसेशन' क्या है?

उत्तर:- 'आर्ट ऑफ कनवरसेशन' बातचीत करने की कला-प्रविधि है जो यूरोप के लोगों में ज्यादा प्रचलित है। इस बातचीत की प्रविधि की पूर्ण शोभा काव्य कला प्रवीण विद्वत् मंडली में है। ऐसी चतुराई के साथ इसमें प्रसंग छेड़े जाते हैं कि जिन्हें सुनकर कान को अत्यन्त सुख मिलता है। साथ ही इसका अन्य नाम 'शुद्ध गोष्ठी' है। इस प्रकार आर्ट ऑफ ~~कनव~~ कनवरशेसन मनुष्य के आपस में बातचीत की उत्तम कला है जिसके द्वारा मनुष्य बातचीत को हमेशा आनन्दमय बनाये रहता है।

प्रश्न:- 'बातचीत' के सम्बन्ध में बेन जॉनसन के क्या विचार हैं?

उत्तर:- बेन जॉनसन के अनुसार बोलने से ही मनुष्य के रूप का साक्षात्कार होता है। वास्तव में जब तक मनुष्य बोलता नहीं तब तक उसका गुण-दोष प्रकट नहीं होता है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ० सं० महावि० सुरसेना, पूर्णियाँ
16/08/20

शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० - पत्र

जयद्रथ - वध काव्य खण्ड

कवि - मैथिलीशरण गुप्त

"मधु - गन्ध मणि - मय मन्दिरों से फैलती सुन्दर जहाँ,
यह दीखती अलकापुरी, उपमा अहो ! इसकी कहाँ ?
गाते प्रियाओं के सहित रस - राग यक्ष जहाँ - तहाँ,
प्रत्यक्ष - सी उत्तर दिशा की दीखती लक्ष्मी यहाँ।"

भावार्थ :- प्रस्तुत पद्यांश के माध्यम से कवि अर्जुन श्रीकृष्ण के साथ कैलाश पर्वत को जा रहे हैं उस समय का वर्णन करते हुए कहते हैं वह पल कितना मनोरम है। अर्जुन कहते हैं कि यह देखो अलकापुरी। यह इन्द्रलोक है। यहाँ के घरों से पुष्पों के रस की सुगंधि फैल रही है। यहाँ के सभी घर मणियों से जड़े हुए हैं। इसकी सुन्दरता की उपमा कहीं भी नहीं मिलती है। यहाँ पर गाने वाली जाति गण बहुत ही मधुर राग में जहाँ - तहाँ अपनी - प्रियाओं के गान गा रहे हैं। यहाँ पर उत्तर दिशा की यह लक्ष्मी प्रत्यक्ष सी दिखलाई पड़ती है।

उपर्युक्त पदों में इन्द्रलोक के वैभव का पुराणों के अनुसार वर्णन किया गया है। जहाँ के समस्त घर मणियों से जड़े हुए हैं, जिसके कारण भव्य दिखलाई पड़ रहे हैं। जहाँ रात - दिन संगीत की मधुर स्वर लहरी गूँजती हुई सुनाई पड़ती है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ
16/08/20

शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०—पत्र

'पथिक' खण्ड काव्य, कवि - श्रीराम नरेश त्रिपाठी

प्रश्न:- "राग-रंचि रवि राग पची" का भाव स्पष्ट करें।

उत्तर:- प्रस्तुत पंक्तियाँ श्रीरामनरेश त्रिपाठी जी के 'पथिक' खण्ड काव्य से ली गई है। इन पँक्तियों के माध्यम से कवि ने प्रभात काल का बड़ा ही अलंकृत वर्णन प्रस्तुत किया है। कवि ने प्रभात को प्रेम के रथ पर आरूढ़ होने वाला तथा सूर्य को प्रेम का पथिक कहा है। इसी अर्थ के स्पष्टीकरण हेतु 'राग-रंचि एवं रवि-रागपची का प्रयोग हुआ है। निःसंदेह प्रातः कालीन-सौन्दर्य देखते ही बनता है। प्रभात कालीन यह सुहावना समय स्फूर्तिदायक और आनन्द प्रदान करने वाला होता है। इस समय सूर्य की फूटती हुई लाल किरणें मानव-मन को अपने सौन्दर्य से अनुभूत कर देती है। प्रेम और आह्लाद का संचार होना ऐसे क्षणों में स्वाभाविक ही है।

सूर्य की लालिमा मानो प्रेम की लाली का प्रतीक है। प्रेम का रंग साहित्य में लाल माना गया है। इसी तरह सौन्दर्य युक्त प्रभात एक दिन समुद्र तट पर उतरा था, तब समुद्र की लहरें किनारों से रह-रहकर टकरा रही थी। ये लहरें समुद्र-तट से टकरा-टकरा कर मानों झूम रही हैं।

प्रातः काल का यह सौन्दर्य उतना ही उन्मादक और आकर्षक, मधुर एवं शान्तिदायक होता है जितना की दुःख के बाद सुख रुचिकर हुआ करता है।

कवि त्रिपाठी जी प्रकृति प्रेमी है। उन्होंने प्रकृति के सौन्दर्य का मनोरम चित्र प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से किया है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महा वि० सुखसेना, पूर्णियाँ
16/08/20